

तस्य दिव्येन चक्षुषि मुषितानि वः MBH. 1, 6824. मुञ्जती प्रभया राज्ञो चक्षु-
षि च मनसि च 3, 2198. दैवं हि प्रज्ञा मुञ्जाति चनुस्तेज इवापतत् *das*
Schicksal raubt ja (dem Menschen) *den Verstand, wie ein plötzlich er-*
scheinendes Licht die Sehkraft Spr. 4219. मायया मुषितचेतसः BHĀG. P.
8, 12, 10. मुञ्जन्नत्रियतेज्ञासि नक्षत्राणामिवांशुमान् MBH. 7, 6569. अथ चन्द्र-
प्रभो मुञ्जन्नादित्यस्य पुरःसरः । अरूपा ऽभ्युदयो चक्रे 8458. (बलम्) मुञ्जच्च
तो मरुत्त्रांशोर्गगने विपुलां प्रभाम् R. 4, 39, 8. सैन्येणमुषितार्कदीधिति
RAGH. 11, 51. मुञ्जत्तमिव (= खण्डयत्तमिव Schol.) तेज्ञासि BHĀTT. 9, 92.
प्रत्ययः स्त्रीषु मुञ्जाति विमर्श विडम्बामपि KATHĀS. 20, 124, 34, 2. पानमदेन
मुषितस्मृतिः 36, 289. मारमुषितत्रया 66, 90. BHĀG. P. 3, 18, 2. मुञ्जन् श्रिय-
मशोकानां रक्तैः परिजनाम्बरैः । गीतेर्वराङ्गनानां च कोकिलधर्मरघुनिम् ॥
so v. a. *übertreffend* KATHĀS. 53, 113. वामपादाम्बुजाप्रेण मुञ्जता पल्लवच्छ-
विम् PAÑĀR. 3, 15, 8. मुषित = कृत und खण्डित (vgl. 4. मुष्) H. an. 3,

286 (कृत fehlerhaft für कृत). MED. t. 143. — Vgl. मूष्.

— desid. मुमुषियति P. 1, 2, 8. VOP. 19, 16. — Vgl. मुमुषिषु.

— अत्र *wegnehmen* KĀTH. 23, 5.

— आ *an sich reissen, wegnehmen*: आमृष्या सोममपिबच्चमूषु RV. 3,
48, 4. 8, 4, 4. AIT. Br. 7, 27. घोरैदयत्पणिमा गा अमुञ्जात् RV. 10, 67, 6. —
Vgl. आमोष fg.

— उद्, partic. उन्मुषित *gestohlen* VARĀH. BRH. S. 51, 28.

— निम् *entziehen, ausziehen*: वासः KAUC. 34.

— परि *rauben, berauben* (mit 2 acc.): नैनान्यमः परि मुञ्जाति रेतैः
AV. 4, 34, 4. सोममाद्रियमाणं गन्धर्वो विश्वावसुः पर्यमुञ्जात् TS. 6, 1, 8, 5.
ÇAT. Br. 3, 2, 4, 2. परिमुञ्जति शास्त्राणि धर्मस्य परिपन्थिनः MBH. 12, 5431.
अन्योऽन्यं परिमुञ्जतः 3, 13030. कृस्तो कृतं परिमुषेत् 13047. 12, 2562
(hier wohl auch कृस्तो कृतं zu lesen). दस्युभिः परिमुष्यताम् (partic.
pass.) — प्रज्ञानाम् 360. — Vgl. परिमोष fgg.

— प्र *rauben, wegnehmen*: मा न् अयाः प्र अयाःप्र nach AV. PRĀT. 2,
76) मोषीः RV. 1, 24, 11. PĀR. GRH. 2, 1. मा नः प्रिया भोजनानि प्र मोषीः
RV. 1, 104, 8. प्रात्रं भेदं सर्वताता मुषायत् 7, 18, 19. चतुः ÇAT. Br. 14, 1, 2,
16. परात्मीयविवेकं च प्रामुञ्जात्कपिरुसाम् BHĀTT. 17, 60. त्रीडाप्रमुषि-
तकृसावलोकं BHĀG. P. 5, 1, 29. नारायणापादपङ्कजस्मृतिः प्रमुष्टातिशये-
न्द्रियोत्सवात् 19, 22. प्रमुषितेन्द्रियं fortigerissen 8, 12, 27. तापेन दक्षमानो
ऽत्तमूकः प्रमुषितो यथा so v. a. *ausser sich* KATHĀS. 7, 66. Vgl. प्रमुषिता.

— संप्र. चित्तसंप्रमुषित *hingerissen* VJUTP. 25.

— वि *rauben, wegnehmen*: प्रकाश तदृष्टिविमुष्टरोचिषः BHĀG. P. 7,
8, 32. नूनं विमुष्टमतपस्त्व मायया ते 4, 9, 9. विमुषयन् partic. dass.
ÇATR. 14, 343.

2. मुष् (= 1. मुष्) am Ende eines comp. (nom. मुष्ट) *raubend, wegneh-*
mend: अश्व्यं BHĀG. P. 4, 19, 36. धान्यं (काक) VARĀH. BRH. S. 93, 11. च-
क्षुर्मुष् MBH. 12, 12705. यशो 2, 2138 = 3, 789. धृतिं Spr. 962. 3168. घ-
नतिमिरमुषि श्योतिषि so v. a. *vernichtend* ÇIÇ. 4, 67. दैतं Verz. d. Oxf.
H. 258, 6, 5. मधुकरश्रीं so v. a. *übertreffend* MRGH. 48. RĪ. 6, 13. VARĀH.
BRH. S. 28, 14. शाशिकरमुषः सौधशिखराः PRAB. 79, 12. Vgl. इष्टिं, नेत्रं
(nicht sowohl *fesselnd* als vielmehr *blending*), यज्ञं. RĀGĀ-TAR. 3, 168
will BENFVY मुषे st. मुखे lesen und jenes als nom act. fassen, was aber
auch Schwierigkeiten macht.

3. मुष्, मोषति = मष् DhĀTUP. 17, 41, v. 1.

4. मुष्, मुष्यति = मुष् (खण्डने) DhĀTUP. 26, 111, v. 1. Hierher ziehen
die Scholiasten den aor. in der Stelle राघवस्यामुषः कात्ताम् BHĀTT. 15,
15. Der eine Schol. erklärt die Form durch खण्डितवानसि, der andere
durch अपकृतवान् *geraubt* (s. 1. मुष्).

मुष्क m. = मूष्क *Maus* WILSON.

मुष्ल s. मुसल.

मुषा f. = मूषा *Schmelztiegel* RĀJAM. zu AK. 2, 10, 33. ÇKDR.

मुषि (von 1. मुष्) adj. *raubend* in मनो.

मुषितक (von मुषित, partic. von 1. मुष्) n. *gestohlenes Gut* DAÇAK.
74, 46.

मुषीर्वन् (von 1. मुष्) m. *Räuber, Dieb* NAIGH. 3, 24. RV. 4, 42, 3.

मुष्क (demin. von मुष् = मूष् *Maus*; also eig. *Mäuschen*) UṆĀDIS. 3, 41.
m. 1) *Hode* AK. 2, 6, 2, 27. H. 612. an. 2, 13. MED. k. 30. HALĀJ. 2, 368. P.
5, 2, 107. किम् वावान्मुष्कयोर्बद्ध आसते RV. 10, 38, 5. AV. 4, 37, 1. 6, 127.
2. ÇAT. Br. 14, 9, 4, 3. स्रस्तं सुच. 1, 118, 17. शोफ 290, 8. 2, 249, 3. ञ्चो-
तम् *vas deferens* und *funiculus* 37, 12. इन्द्रो मुष्कविषोर्गं मेषवृषणालं
चावाप MBH. 12, 13205. VARĀH. BRH. S. 66, 2. 70, 24. BRH. 3, 3. ऽद्वयं ल-
म्बमानम् HIT. 49, 14. ऽदेशे 34, 21. सदैवमुष्क heisst Indra RV. 6, 46, 3.
8, 19, 32. सममुष्कचतुष्क MBH. 12, 12706; nach NILAK. kann hier मुष्क
auch = बाहु sein, wobei er sich auf die oben angeführte Stelle RV.
10, 38, 5 beruft. — 2) *die weibliche Scham*, du.: अमुष्या अघ्निं मुष्कयोः
AV. 6, 138, 4. 5. 8, 6, 5. मूष्काविदस्या एजतः VS. 23, 28. TS. 2, 4, 8, 5. 6.
पर्वन्पर्वन्मुष्कान्कृत्वा — शोपास्यकुरुत ÇĀÑKH. Br. 23, 4. — 3) *ein best.*
Baum, = मुष्कक (मोल, मोलक) H. an. MED. — 4) *ein fleischiger* —
starker Mann (मौसल). — 5) *Dieb* (vgl. मुष्) H. an. — 6) *Menge, Masse*
H. an. MED. (st. संकृति ist wie bei UṆĀVAL. zu UṆĀDIS. 3, 41 संघाते zu
lösen). — Vgl. ऋजुं, कुम्भं.

मुष्कक m. *ein best. Baum*, dessen Asche als cautorium gebraucht
wird, vulgo घण्टापाहलि, AK. 2, 4, 2, 20. RATNAM. 222. सुच. 2, 36, 10.
69, 20. 77, 15. 209, 9. असितं 1, 32, 7. 146, 6. 223, 12. कालं RATNAM. 222.

मुष्ककच्छू (मु + क) f. *Ausschlag am Hodensack* सुच. 2, 123, 2.

मुष्कभार (मु + भार) adj. *testiculatus* RV. 10, 102, 4.

मुष्कर 1) adj. (von मुष्क) *testiculatus* P. 5, 2, 107. H. 457 (= प्रलम्बा-
ण्ड). TS. 5, 5, 4, 1. TBR. 1, 8, 2, 2. ÇAT. Br. 3, 7, 2, 6. 5, 1, 3, 7. 10. — 2) m.
wie es scheint *ein best. kleines Thier* oder *Insect*: निर्वलासं बलासिनः
निपोमिं मुष्करं यथा AV. 6, 14, 2. Darf man निपोमि in अदपोमि ändern,
so bleibt मुष्कर in der Bed. *testiculatus*.

मुष्कवत् (von मुष्क) adj. *testiculatus*, Bein. Indra's als Liedverfas-
sers von RV. 10, 38 (vgl. daselbst v. 5). RV. ANUKR.

मुष्कप्रूय (मु + प्रू) m. *ein Verschnittener, Eunuch* ÇĀDDAM. im ÇKDR.

मुष्काबर्ह (मुष्क + अ) m. *Verschneider* AV. 3, 9, 2.

मुष्टामुष्टि adv. = मुष्टीमुष्टि VOP. 6, 33.

मुष्टि m. f. TRIK. 3, 5, 16. SIDDH. K. 251, a, 12. 1) *die geschlossene* —
geballte Hand, Faust H. 597. MED. † 24. fg. HALĀJ. 2, 368. 382. (इन्द्रभे)
इन्द्रस्य मुष्टिरसि वीरुयंस्व RV. 6, 47, 30. गभे मुष्टिर्मतंमयत् VS. 23, 24.
यज्ञं मुष्टोः कुरुते AIT. Br. 1, 3. ऽकरणा *das Ballen der Hand* KĀTI. ÇR. 7,
4, 4. ऽविसर्ग 17. ÇĀÑKH. ÇR. 1, 10, 5. 4, 3, 6. मुष्टिप्रसृताञ्जलयः KAUC. 61.
67. यथा वै दे वामलके दे वा कोले दे वा वातो मुष्टिरनुभवति KĀND. UP. 7.